बड्डे गुरु और लोकतन्त्र

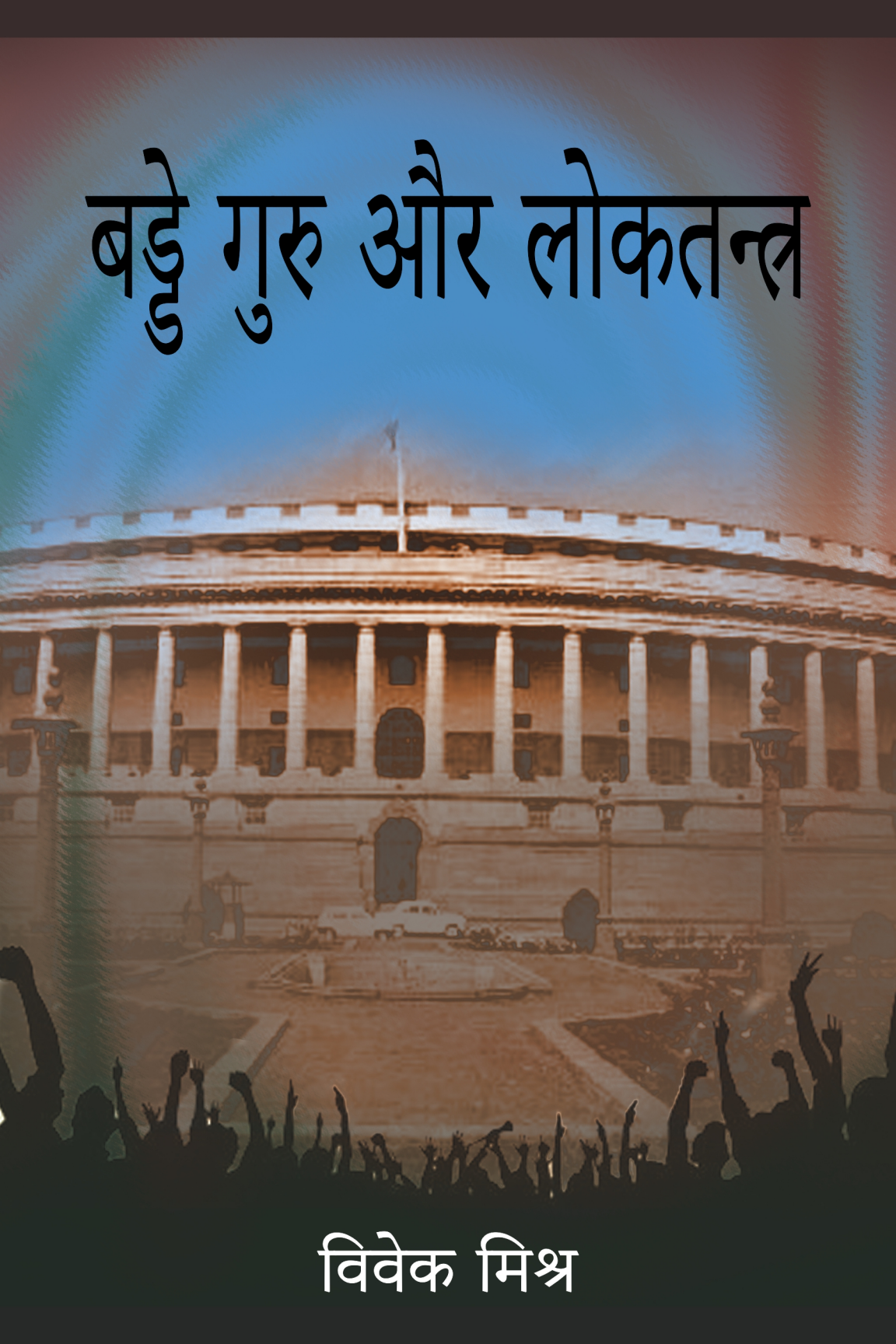

विवेक मिश्र

परिचय-विवेक मिश्र

15 अगस्त 1970 में उत्तर प्रदेश के झांसी शहर में जन्म। विज्ञान में स्नातक, दन्त स्वास्थ विज्ञान में विशेष शिक्षा, पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नात्कोत्तर। दो कहानी संग्रह-'हनियाँ तथा अन्य कहानियाँ' एवं 'पार उतरना धीरे से' प्रकाशित। तीसरा कहानी संग्रह- 'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ?' शीध्र प्रकाश्य। लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविताएं व कहानियाँ प्रकाशित। कुछ कहानियाँ संपादित संग्रहों व स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में शामिल। साठ से अधिक वृत्तचित्रों की संकल्पना एवं पटकथा लेखन। 'light through a labyrinth' शीर्षक से कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद राईटर्स वर्कशाप, कलकत्ता से तथा कहानिओं का बंगला अनुवाद डाना पब्लिकेशन, कलकत्ता से प्रकाशित।

संपर्क- 123-सी, पाकेट-सी, मयूर विहार फेज़-2, दिल्ली-91

मो;-9810853128

ईमेल;- vivek_space@yahoo.com

बड्डे गुरु और लोकतन्त्र

देश के आम चुनावों का हमारे शहर के बड्डे गुरु के साथ बहुत पुराना रिश्ता था। सफ़ेद कलफ़ लगा धोती-कुर्ता, खादी ग्राम उद्योग से ख़रीदी हुई हल्के भूरे रंग की जैकेट, काले जूते और सिर पर रखी सफ़ेद गाँधी टोपी। रंगे हुए काले बाल, तेल लगी बड़-बड़ी मूँछें और दमकता गेहूँआ रंग। चौड़ा माथा, फैली दूर तक देखती आँखें। मध्यम कद एवं गठीले बदन के बड्डे गुरु। पहली बार देखने पर लगता कोई इतिहास की किताब से निकलकर सामने खड़ा हो गया है। बड्डे गुरु कितने पढ़े-लिखे थे, यह तो कोई नहीं जानता था। पर उनकी राजनीति में रुचि एवं जानकारी को सभी मानते थे। कुल मिलाकर एक सम्मानित व्यक्ति दिखते थे परन्तु वह जहाँ भी जाते लोग उन्हें देखकर हँसते, कुछ मुँह फेरकर, कुछ उनके सामने। कुछ दूर से किनारा कर लेते। जो सामने पड़ जाता बरबस ही हाथ जोड़कर, नमस्ते करता। बड्डे गुरु कोई बात कहने को मुँह खोलते, पर सामने वाला उससे पहले ही वहाँ से चल देता। किसी भी परिवार में कोई ख़ुशी का अवसर हो या कोई दुख आन पड़ा हो बड्डे गुरु ज़रूर जाते। कोई सामाजिक कार्यक्रम हो या धार्मिक जलसा बड्डे गुरु सबसे पहले पहुँचते और अन्त तक रुकते वह अपने आपको एम. ए. इन पॉलिटिकल सांइस कहते। कभी-कभी उनकी बातचीत से पता भी चलता जब वह संविधान के भारी भरकम अनुच्छेदों को सहज ही सुनाने लगते। जब भी चुनावों की घोषणा होती, बड्डे गुरु में एक विशेष ऊर्जा समा जाती। वह कभी साइकिल से, कभी पैदल, कभी ताँगे और टेम्पो से भाग दौड़ करते। अक्सर यह भाग दौड़ राष्ट्रीय पार्टियों के स्थानीय दफ़्तरों की होती और अन्त में स्वयं को निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत करते। सबसे पहले